मध्यप्रांत और बरार में राष्ट्रीय आन्दोलन की भूमिका (1857 से 1947)

✧ अतुल गुप्ता

1857 में भारतीय सैनिकों द्वारा किया गया विद्रोह यद्यपि भारतीय स्वतंत्रता के लिये किया जाने वाला हमारा प्रथम महाप्रयास था परन्तु यह नहीं कहा जा सकता कि इससे पहले भारतीय अंग्रेजी शासन से पूर्ण संतुष्ट थे। अंग्रेजो की नीति शुरू से ही छल कपट पूर्ण थी। जिसके कारण भारतीय उनसे घृणा करते थे। यही कारण है कि अंग्रेजी राज्य की स्थापना के साथ ही भारतीयों द्वारा उसे उखाड़ फेकने का प्रयत्न किया जाने लगा था।1 इस सैन्य क्रान्ति के पूर्व नागपुर के अप्पा साहब भोंसले प्रथम व्यक्ति थे, जिन्होने अंग्रेजी शासन के विरूद्ध विद्रोह किया। 1942 ई. में चन्द्रपुर (सागर) के जमींदार जवाहर सिंह एवं नरहाट के जमींदार मधुकर शाह ने भी विद्रोह किया था। राष्ट्रीय आन्दोलन के इतिहास में 1857 ई. से पूर्व के विद्रोहों की महत्ता से इन्कार नहीं किया जा सकता।2 राष्ट्रीय आन्दोलन अनेक बलिदानों, गौरवमयी परम्पराओं, प्रभावशाली नई दार्शनिक विचारधाराओं से परिपूर्ण था। जिस समय यह आन्दोलन छिड़ा हुआ था, उस समय के महान बलिदान, त्याग और देशप्रेम की भावना आज भी हमें नई दिशा प्रदान करती है। ''सागर और नर्मदा टैरीटरीज'' (मध्यप्रांत और बरार) की राष्ट्रीय आन्दोलन में महत्वपूर्ण भूमिका रही।

सन् 1857 की राज्यक्रान्ति मई के तृतीय सप्ताह में मेरठ के सैनिकों के विद्रोह से प्रारंभ हुई।3 जनवरी 1857 के प्रथम सप्ताह में नरसिंहपुर जिले के कुछ ग्रामों से छोटी–छोटी चपातियों के रूप में आने वाले तूफान के लक्षण प्रकट हुए, जो सागर तथा नर्मदा क्षेत्रों के अधिकांश जिलों में अत्यधिक रहस्यमय तरीके से गॉव–गॉव में भेजी जा रही थी।4 वे एक संदेश का प्रतीक थी जिसमें लोगों से उन पर आने वाली आकस्मिक और भयंकर घटना के लिये तैयार रहने को कहा गया था। मई के प्रारंभ में ऐसी अफवाह फैलाई जा रही थी कि हिन्दु और मुसलमानों दोनों की धार्मिक पवित्रता नष्ट करने लिये शासन के आदेश से घी, आटा और शक्कर में सुअर और गाय का रक्त एवं हड्डियों का चूर्ण मिलाया जा रहा है।5 इस प्रकार की घटना मध्यप्रदेश के जबलपुर, मंडला, सिवनी बैतूल, सागर, दमोह, नागपुर, रायपुर तथा अन्य जिलों में भी घटी।

उस समय जिला नरसिंहपुर में, कैप्टनवूली की कमाण्ड में 28 वीं मद्रास देशी पदैल सेना की चार कंपनियॉ तैनात थी और डिप्टी कमिश्नर था, कैप्टन टर्नर।6 नरसिंहपुर के डिप्टी कमिश्नर कैप्टन टर्नर को इस पर सन्देह हुआ और उन्होंने यह सूचना जबलपुर के कमिश्नर असकाइन को दी, किन्तु उन्होने इस पर ध्यान नहीं दिया। मेरठ और उसके पश्चात झांसी में विद्रोह होने की सूचना पाते ही सागर के केप्टन सेज सशंकित हो गये और उन्होने मेजर गॉसन के नेतृत्व में एक सेना ललितपुर की ओर भेज दी। जव यह सेना सागर से 37 मील उत्तर की ओर चली गई तव ललितपुर में विद्रोह होने वाले बानपुर के राजा द्वारा विद्रोह करने का समाचार प्राप्त हुआ। उन्होनें सागर से एक सहायक सेना मंगवाई और बालाकोट किले की और प्रस्थान किया। उन दिनों यह किला पूर्णतः विद्रोहियों के अधिकार में था।7 बानपुर के राजा ने ललितपुर पर अधिकार कर लिया और सभी यूरोपियनों को बन्दी बना लिया गया था, बाद में उन्हें छोड़ा दिया गया परन्तु मार्ग में उन्हें शाहगढ के राजा द्वारा बंदी बना लिया गया। वंदियों को तीन माह रखने के वाद उन्हें सागर जाने दिया गया।8

इस बीच सागर में भी स्थिति कुछ सहज नहीं थी। सागर के कैप्टन सेज को भय था कि किसी समय भी आक्रमण हो सकता है। और उसने नगर के पुराने किलों को सुरक्षित रखने के लिये उसका बन्दोवस्त किया।9 ''कैप्टन सेज कुछ सैनिकों को लेकर मेजर गॉसन की सहायता के लिये 30 जून को रवाना हुआ। दूसरे ही दिन सवेरे तृतीय ईर्रेगुलर फोर्स और 42 वी देशी पदैल सेना के साथ झण्डा उठाकर नगाड़ा बजाया और अन्य सैनिकों को आमंत्रित किया। इसके वाद विद्रोही दमोह पहुंचे और किले पर आक्रमण कर दिया। इस आक्रमण से अंग्रेज इतने भयभीत थे कि उन्होंने 31वीं देशी पदैल सेना को विद्रोहियों पर आक्रमण करने का आदेश दिया पर उनके साथ किसी अंग्रेज अधिकारी को नहीं जाने दिया।10 दूसरे दिन सबेरे 31 वीं पदैल सेना को किले के तोपखाने के सैनिकों से सहायता प्राप्त होने का संदेह होते ही विद्रोहियों ने दमोह छोड़ दिया। सेज ने कर्नल डलजेल के साथ 18 सितम्बर को एक बड़ी सेना विद्रोहियों का दमन करने के लिये भेजी, परन्तु वे विद्रोहियों द्वारा मारे गये और उनके सहायक लेटिनेंट प्रायर बुरी तरह जख्मी होकर भाग गया।11

24 जनवरी को सर हयूरोज एक बड़ी सेना लेकर इस किले पर अधिकार करने आये 28 जनवरी को उन्हें सूचना मिली की एक सेना बानपुर के राजा के साथ इसी तरफ आ रही है। हयूरोज ने सेना पर गोली वरसाना शुरू कर दिया विद्रोही सैनिकों का उत्साह कम हो गया तथा उन्होने रात्रि के अंधेरे में राहतगढ का किला छोड़ दिया सबेरे सर हयूरोज की सेना और बानपुर के राजा के सैनिकों के बीच बरोदा नामक ग्राम के समीप भयंकर युद्ध हुआ जिसमें दो अंग्रेज अधिकारी मारे गये और छः घायल हुये। अन्त में विद्रोही सिपाही पराजित हो गये। फरवरी में सागर की पैदल सैना ने विद्रोह कर दिया और गढाकोटा पर अधिकार कर लिया।12 इसके बाद सागर से झॉसी वाले मार्ग पर स्थित सनोदा, मरदानपुर, सरई, नरोरा आदि किले भी इन विद्रोहियों ने ले लिये। अन्त में वे मरादनपुर के समीप सर हयूरोज द्वारा पराजित हुए।13

कुछ समय वाद हिन्डोरिया के जमीनदार के भाई किशोर सिंह ने अपने अनुयायियों के साथ विद्रोह कर दिया। उसके कारण 1857 अगस्त के मध्य में पूरा का पूरा सागर और दमोह में क्रान्तिया होने लगी और अंग्रेजों का हेड क्वार्टर के अलावा पूरा संबंध खत्म हो गया। 13 सितम्बर को हिन्डोरिया का किला नष्ट कर दिया गया। मानगढ का राजा भी विद्रोहियो से मिल गया उसके पकड़े जाने पर बड़ी कठिनाई से विद्रोह को शान्त किया।14

2 अगस्त को कामटी से भी एक सेना वहां पहुंची इस सेना के सिपाही जबलपुर में शान्ति बनाये रखने के लिये भेजे गये थे, इसी समय गढा के गौड़ राजा शंकरशाह उनके पुत्र रघुनाथ और साथियों ने विद्रोह कर दिया और वह पकड़े गये तथा तोप से उड़ा दिये गये।15 21 सितम्बर को सागर से मद्रास कालम की एक घुड़सबार सैना और एक अंग्रेजी सेना इन विद्रोही सैनिकों का दमन करने के लिये भेजी गयी। वाट्सन और जेमीसन ने भी कुछ सेना के साथ वहा पहुंचने का प्रयत्न किया परन्तु वह सफल न हो सका।16 21 अक्टूबर ने विद्रोहियों ने हिरन नदी पार कर ली थी और उन्हें रोकते समय तहसीलदार और एक पुलिस अधिकारी बुरी

तरह जख्मी हुए और अपनी जान बचाकर भागे विद्रोहियों ने पाटन में सरकारी इमारतें नष्ट करदीं तथा कई अंग्रेजों के घर लूट लिये।17 6 दिसम्बर को कैप्टन ऊले के साथ वरगी के विद्रोहों का दमन करने के लिये जबलपुर से एक सेना भेजी गई। ठाकुर देवीसिंह के नेतृत्व में 1500 विद्रोहियों ने इस सेना पर आक्रमण किया किन्तु वे पराजित होकर भाग गये, देवीसिंह पकड़ा गया और उसे फांसी दे दी गई।18 नरसिंहपुर जिले में प्रथम विद्रोह जून 1857 में ढिलवार के गोंड राजा के प्रतिनिधियों द्वारा हुआ। सन् 1857 के अंत तक नरसिंहपुर तथा होशंगावाद की घटनाऐं भी विद्रोहियों के बहुत अनुकूल रही। डिप्टी कमिश्नर कप्तान टेर्नन को जिले में कुछ माह पहले रोटियां बांटे जाने की सूचना प्राप्त हो चुकी थी और जिस घटना को उसने उपेक्षा से देखा था, उसने हीरापुर में स्थित मेहरवानसिंह की सेना पर आक्रमण कर दिया और उसे हरा दिया।19 इसी समय उसके सहायक कप्तान वूली ने सोनाट नदी पार कर ली और वहां पर एकत्रित सेनाओं को पराजित करने में सफल हुआ। ये दोनों अफसर नरसिंहपुर जिले के नर्मदा के उत्तर के क्षेत्र में बढते गए और सन् 1857 के नवम्बर माह के अंत तक उन्होंने इस क्षेत्र के समस्त विद्रोह को ध्वस्त कर दिया।19 होशंगावाद में क्रान्ति का सूत्रपात सन् 1857 के अक्टूबर मास के प्रारंभ में हुआ जब ठाकुर दौलतसिंह के नेतृत्व में एक विशाल जनसमूह ने नेमावर तहसील में विद्रोह का झंडा ऊँचा किया और वह सतवास में दृढता से जम गया यद्यपि कुछ समय के लिये अंग्रेजी सेना ने उन्हें बाहर निकाल दिया परन्तु वे पुनः उस पर अधिकार जमाने में सफल हो गए। जनवरी माह के अंत में होशंगावाद जिले को विद्रोहियों से मुक्त कर दिया गया।20 मंडला जिले में भी 1857 की क्रान्ति की ज्वाला भड़क उठी। उन दिनों इस जिले के छोटे–छोटे राजाओं और जमींदारों के दिल भी विद्रोही हो उठे थे। सन् 1842 के बुन्देला विद्रोह का एक सेनानी ढिल्लनशाह इन गोंड राजाओं और जमींदारों का सरदार था जैसे ही उसे पकड़ कर फांसी दी गई, मंडला जिले में विद्रोह तीव्र गति से प्रारंभी हो गया। शाहपुर के और सोहागपुर के राजाओं ने अपनी सेना तथा संबंधियों के साथ विद्रोह कर दिया। जबलपुर के राजा शंकरशाह ने भी विद्रोह में भाग लिया और उसे तोप से उड़ा दिया गया। मण्डला के निकट रामगढ के राजा लक्ष्मण सिंह भी विद्रोह में भाग लिया था और वह शहीद हो गये ।तब उनकी विधवा रानी ने विद्रोहियों का नेतृत्व किया तथा अंग्रेजी सैनिकों से घिर जाने और अवश्यंभावी पराजय को सामने देखकर उन्होने स्वयं को कटार घोंप ली ताकि अंग्रेज सैनिक उनके जीवित शरीर को अपमान न कर सके। सेना के साथ के सिविल सर्जन ने उन्हें बचाने का प्रयत्न किया किन्तु उन्हें बचाया नहीं जा सका। रामगढ़ की रानी ने अपनी वीरता से रानी दुर्गावती के गौरवशाली बलिदान का इतिहास दुहरा दिया।21

शाहपुर के जमींदार विजयसिंह विद्रोहियों से मिल गये ओर जव तक वे जीवित रहे उन्होने अंग्रेज अधिकारियों को चैन से न बैठने दिया।22 इसी प्रकार बैतूल जिले में भी 1857 का विद्रोह शुरू हो गया यद्यपि बैतूल में विद्रोह का कोई प्रत्यक्ष कारण नहीं था। बैतूल के शिवदीन पटेल ने तात्कालीन डिप्टी कमिश्नर मि. ब्राउन की अप्पा साहब का पीछा करने तथा पिंडारियों के दमन में बहुत सहायता की थी किन्तु 1857 के विद्रोह के समय उन पर तथा उसके भाई रामदीन पटेल पर विद्रोह का सन्देह किया गया और 5 अक्टूबर 1857 को गिरतार कर लिया गया और उन्हें 7 वर्ष का कारवास का दंड दिया गया तथा उनकी सम्पत्ति भी जब्त कर ली गई दोनों पटेल बन्धु कुछ समय बाद नागपुर जेल में मृत्यु को प्राप्त हो गये।23 दूसरे वर्ष तात्या टोपे की सेना के कुछ आदमी मुलताई और मासोद में पकड़े गये और उन्हें फांसी दे दी गई। 5 अक्टूबर 1858 को मराठा सेनापति तात्या टोपे अपनी सेना के साथ मुलताई और मासोद, अटनेर, सांवलमेढा भेंसदेही होते हुए निमाड़ जिले पहुँचे। उनके पश्चात वांदा के विद्रोही नबाव ने छिन्दवाड़ा के पश्चिमी तथा बैतूल जिले के पूर्वी भाग में लूटमार की। उन्हीं के सैनिकों द्वारा मुलताई के एक तहसीलदार, एक पुलिस अधिकारी और कुछ चपरासी मारे गये। छिन्दवाड़ा के मैकूलाल को भी नबाब के सैनिकों ने मुलताई में फांसी दे दी। अगस्त 1858 में जमींदार ठाकुर चैनसिंह विद्रोहियों से मिल गये। नागपुर के सूवेदार मेजर ने कुछ सैनिकों के साथ उनका पीछा किया किन्तु वे उन्हें पकड़ न पाए। अक्टूबर 1858 में इस जिले में अनेक ग्रामों में लाल झण्डा, नारियल–सुपारी और सुपारी के हरे पत्ते के साथ बांटा गया। यह तात्या टोपे औरा नाना साहब के आदमियों का कार्य समझा गया किन्तु इसका कोई परिणाम न हुआ।24

16 जून 1858 को बारूद विभाग के एक कर्मचारी हनुमान सिंह ने विद्रोह कर दिया परन्तु उसे गिरतार कर फांसी दे दी गई। नागपुर के दो प्रतिष्ठित मुस्लिम परिवारों के प्रमुख नवाव कादिर अली खॉ और श्री विलायत मियां जनता को विद्रोह करने के लिये प्रोत्साहित करने के जुर्म में गिरतार किये गये और फांसी पर चढा दिये गये।25 जिस समय भारत के अन्य स्थानों में विद्रोह की आग जल रही थी उस समय चान्दा जिले के तथा हैदरावाद की सीमा में बसे हुए गोंडों ने जिले में अशांति फैला दी। तत्कालीन डिप्टी कमिश्नर मि. क्रिकटन ने मार्च 1858 तक किसी तरह विद्रोह नहीं होने दिया। इसके वाद जमींदार बाबाव, आर. पल्ली और व्यंकटराव ने विद्रोह की घोषणा कर दी और रूहेलों के सहयोग से एक सेना संगठित कर 29 अप्रैल को तीन अंग्रेज अधिकारियों पर हमला किया, उनमें से दो मारे गये। इसके अलावा उन्होने अन्य स्थानों पर भी आक्रमण किया परन्तु वे सफल नहीं हुए। बाबूराव 21 अक्टूबर को फांसी पर चढा दिये गये और व्यंकटराव वस्तर की ओर भाग गया, जो अप्रैल 1860 में वस्तर के राजा द्वारा पकड़ा गया और उसे कालापानी का दण्ड दिया गया।26 रायपुर में विद्रोह 18 मार्च को संध्या के साढे सात बजे प्रारंभ हुआ सैनिकों ने तृतीय रेगुलर रेजीमेन्ट के अंग्रेज मेजर की हत्या कर दी। उदयपुर (सरगुजा) नरेश के दोनों भाइयों ने सन 1858 के दिसम्बर मास में एक सैनिक संगठन के साथ विद्रोह कर दिया। दोनों भाई 1859 में सरगुजा के राजा द्वारा गिरतार कर लिये गये और उन्हें आजन्म कालेपानी का दण्ड देकर अण्डमान टापू में भेज दिया गया।27 रायपुर में विद्रोह 18 मार्च को संध्या के साढे सात बजे प्रारंभ हुआ सैनिकों ने तृतीय रेगुलर रेजीमेन्ट के अंग्रेज मेजर की हत्या कर दी। विद्रोही सैनिकों में तोपखाने के 14 हवलदार और तृतीय रेगुलर फोर्स के 2 सिपाही थे। जबलपुर से 33 बीं मद्रास देशी पदैल सेना मंगवाकर विद्रोह दवा दिया गया। विद्रोहियों पर दो दिन तक मुकदमा चलाया गया और सवको फांसी पर चढा दिया गया। उदयपुर (सरगुजा) नरेश के दोनों भाईयों ने सन 1858 के दिसम्बर माह में एक सैनिक संगठन के साथ विद्रोह कर दिया दोनों भाई 1859 में सरगुजा के राजा द्वारा गिरतार कर लिये गये और उन्हें आजन्म काले पानी की सजा देकर अण्डमान टापू में भेज दिया गया।27

1857 के विद्रोह का मध्यप्रांत के विशाल भू–भाग पर व्यापक प्रभाव पड़ा और जन मानस में राष्ट्रीयता की भावना का विकास हुआ। 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध में अनेक सामाजिक एवं स्वयंसेवी संस्थाओं और संगठनों का आविर्भाव हुआ। इन सभी संस्थाओं ने देश के पुर्नजागरण में महत्वपूर्ण योगदान दिया तथा जिले

के लोगों में जागृति उत्पन्न की। इस राष्ट्रीय चेतना के विकास की अभिव्यक्ति 1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के गठन के रूप में हुई इसका सातवां अधिवेशन नागपुर में हुआ और उसके परिणामस्वरूप महाकौशल क्षेत्र में स्वतंत्रता आन्दोलन को अत्यधिक उत्साह मिला।28

1885 में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस की स्थापना हुई, तव से लेकर स्वतंत्रता प्राप्ति करने की कड़ी तक देश में जो अहिंसक आन्दोलन गांधी जी द्वारा चलाया गया वह विश्व के इतिहास में कम ही देखने को मिलता है। 1885 से 1905 के काल में भारत के राष्ट्रीय आन्दोलन पर उदारवादियों का प्रभाव बना रहा। ये उदारवादी उच्च कोटी के देशभक्त थे। उदारवादी हिंसा तथा संघर्ष का विरोध करते थे अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिये स्मृति पत्रों, प्रतिनिधि मण्डलों का मार्ग अपनाते थे। तत्पश्चात वीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ में लोकमान्य वालगंगाधर तिलक के नेतृत्व में उग्रवादी विचारधारा ने जन्म लिया ब्रिटिश सरकार इस विचार धारा से प्रभावित हुई। इस विचारधारा के विकास ने भारत में राष्ट्रीय आन्दोलन पर एक स्वस्थ्य प्रभाव डाला।29

1903 में मध्यप्रांत में वरार को सम्मिलित कर दिये जाने के वाद प्रांत की गतिविधियों और अधिक तीव्र हो गई। 1904 में लोकमान्य वालगंगाधर तिलक के नागपुर आ जाने से प्रांत की जागरूकता में वृद्धि हुई। पुराने मध्यप्रदेश का प्रथम प्रांतीय सम्मेलन 22 अप्रेल 1905 को नागपुर में हुआ, जिसके अध्यक्ष दादा साहब, जी.एस.खापर्डे थे। यद्यपि इस प्रकार की कार्यवाही को राजनैतिक असंतोष से बड़ावा मिला था, यद्यपि भाषण में सत्ता के प्रति आदर भी व्यक्त हुआ था। लार्डकर्जन द्वारा 1905 में बंगाल विभाजन किये जाने के पश्चात राष्ट्रीय आन्दोलन की प्रगति अपने द्वितीय चरण में प्रविष्ट हुई। 1906 में जबलपुर में सर गंगाधर राव चिटनवीस की अध्यक्षता में कांग्रेस का अधिवेशन हुआ तो स्वदेशी के प्रश्न पर बहुत वाद विवाद हुआ। अध्यक्ष ने प्रिंस ऑफ वेल्स तथा राजकुमारी के भारत आगमन का स्वागत किया तथा राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रगतिशील पक्ष की कार्यवाहियों की आलोचना की। सम्मेलन में इस विषय पर बहुत उग्र वाद विवाद हुआ। खापर्डे चाहते थे की प्रतिनिधि इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लें यद्यपि उदार लोगों ने उनका अनुमोदन नहीं किया किन्तु फिर भी प्रस्ताव पारित कर दिया गया।30 इस प्रकार बंगाल विभाजन 1906 में गंगाधर राव चिटनवीस की अध्यक्षता में जबलपुर में अधिवेशन तथा 1907 में नागपरु से हिन्द केसरी के प्रकाशन का मध्यप्रांत एवं वरार प्रांत पर अत्यधिक प्रभाव पड़ा। 1906 के सूरत अधिवेशन में कांग्रेस के विभाजन के पश्चात् कांग्रेस नरम और गरम दल में विभाजित हो गई। नरम दल का नेतृत्व गोपाल कृष्ण गोखले कर रहे थे तथा गरम दल का नेतृत्व बाल गंगाधर तिलक कर रहे थे। मध्यप्रांत में नरम दल के नेता गंगाधर राव चिटनवीस, आर.एन.मुधेलकर तथा तोरोपंत जोशी थे। गरम दल के नेता दादा साहेव खापर्डे, डॉ बी.एस.मुंजे तथा माधव श्रीधर अणे थे। मध्यप्रांत और वरार दोनों ही विचारधाराओं का केन्द्र था।31

1914 में प्रथम विश्वयुद्ध के प्रारंभ होने के साथ लोकमान्य वाल गंगाधर तिलक को रिहा कर दिया गया। 1918 में नरसिंहपुर जिले में भी होमरूल लीग की शाखा खोली गई। 24 नवम्बर 1918 को प्रांतीय कांग्रेस समिति का पुनर्गठन किया गया और अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के लिए सदस्यों का निर्वाचन किया गया, जिनमें अन्य सदस्यों के साथ नरसिंहपुर के मानिकचन्द्र कोचर भी निर्वाचित किए गए।32 1919 में जलियांवाला बाग हत्याकांड तथा खिलाफत आन्दोलन ने ब्रिटिश सरकार के प्रति विरोधी वातावरण निर्मित कर दिया। 1920 को नागपुर अधिवेशन में महात्मा गांधी के असहयोग प्रस्ताव के बहुमत से पारित किये जाने के साथ कांग्रेस संगठन और संविधान में भी परिवर्तन किया गया। मध्यप्रांत और वरार की तीन कांग्रेस कमेटियों में विभाजित कर दिया गया। हिन्दुंस्तानी, विदर्भ तथा मराठी मध्यप्रांत। हिन्दुस्तानी मध्यप्रांत, जो बाद में महाकौशल प्रान्तीय समिति कहलाया, वरार मध्यप्रांत, जो वाद में विदर्भ प्रांतीय समिति कहलाया तथा मराठी मध्यप्रांत जो वाद में नागपुर प्रांतीय समिति कहलाया। भाषा के सिद्धांत पर प्रांतो की इस पुनर्व्यवस्था का आन्दोलन के विकास में महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ा। वाद में प्रांतीया जिला तहसील तथ ग्रामीण स्तर पर कांग्रेस कमेटियों का निर्माण किया गया। हिन्दुस्तानी मध्यप्रांत के 14, विदर्भ में 4 तथा मराठी मध्यप्रांत में 4 जिले थे। हिन्दुस्तानी मध्यप्रांत का मुख्यालय जबलपुर, विदर्भ का अमरावती तथा मराठी मध्यप्रांत का नागपुर था।33

राष्ट्रीय आन्दोलन में छात्रों का योगदान का विशेष उल्लेख करते हुए उन्होने कहा " कांग्रेस के सिद्धांतो का सबसे अधिक प्रभावकारी प्रचार नगर की गलियों तथा बाजारों में राष्ट्रीय गीत गाते हुए घूम–घूम कर युवा विद्यार्थियों के दलों द्वारा किया गया है" इसका परिणाम जनता में एक नवीन चेतना जागृत हो गई। कांग्रेस ने महाकौशल के लिए एक कार्यक्रम तैयार कर दिया। इसी प्रकार मध्यप्रांत और वरार के बैतूल, दमोह, नागपुर, सागर आदि जिलों में भी असहयोग आन्दोलन को गति प्रदान की गई। सभी जिलों में विदेशी वस्तुओं तथा शालाओं का बहिष्कार किया गया।34 इस प्रकार 1920 में गांधी जी के असहयोग आन्दोलन के आव्हान पर इस प्रांत ने अपने आपको समर्पित कर दिया। सेठ गोविन्द दास, पं. द्वारका प्रसाद मिश्रा, पंडित रविशंकर शुक्ल, माखनलाल चतुर्वेदी, डॉ. राघवेन्द्र, डॉ हरिसिंह गौर, मराठी मध्यप्रांत के डॉ. बी. एस. मुंजे, गंगाधर रावचिनवीस, सर मारोपंत जोधी, सेठ जमनालाल बजाज, बलवंतराव देशमुख आर.एन. मुघोलकर तथा वरार के एम. एस. अणे, वीर वामन राव जोशी, बृजलाल वियाणी, दादा साहव सहस्त्र बुद्धे आदि ने आन्दोलन को गति प्रदान की। 1923 का वर्ष " स्वराज्य दल" के गठन के साथ "झंडा सत्याग्रह" के लिये भी विशेष उल्लेखनीय है। 8 मार्च 1923 को पंडित सुन्दरलाल के नेतृत्व में जबलपुर नगरपालिका पर झंडा फहराकर झंडा सत्याग्रह का सूत्रपात किया गया। 35 यूरोपीय अधिकारी द्वारा झंडे का अपमान किये जाने से शेषपूर्ण आन्दोलन शुरू हो गया। सरकार के आदेश की अवहेलना करते हुए जिला कांग्रेस समिति ने सत्याग्रह प्रारंभ कर दिया तथा पंडित सुन्दरलाल, सुभद्रा कुमारी चौहान, नाथूराम मोदी तथा कुछ अन्य स्वयं सेवको ने झंडे के साथ एक जुलूस निकाला। जुलूस पुलिस द्वारा रोक दिया गया तथा सभी नेताओं को गिरतार कर लिया गया पंडित सुन्दरलाल पर मुकदमा चलाया तथा छह माह के कारावास की सजा दी गई। इसके पश्चात इस सत्याग्रह का केन्द्र नागपुर हो गया, जहां इस सत्याग्रह को श्रीमती सुभद्रा कुमार चौहान, लक्ष्मण सिंह चौहान तथा जमनालाल बजाज द्वारा नेतृत्व प्रदान किया गया। नरसिंहपुर जिले से भी सत्याग्रह में भाग लेने के लिये स्वयं सेवक नागपुर गये।36

1924 से बैतूल जिले ने स्वतंत्रता आन्दोलन में सक्रिय रूप से भाग लिया। 1925 में जिला कांग्रेस का अध्यक्ष बिहारीलाल पटेल को चुना गया। वे 1936 तक अध्यक्ष पद पर रहे। उनके कार्यकाल के दौरान जिला परिषद, ने स्वतंत्रता आन्दोलन में एक अनूठी भूमिका आद की, जो मध्यप्रदेश के इतिहास में अतुल्य रही। उसके रायपुर जिला परिषद अकेले ही आन्दोलन में डटी रही।37 1925 में जबलपुर में भारत "स्काउट दल" की स्थापना की गई जो कांग्रेस का स्वयं सेवक संगठन था। उसी वर्ष "छात्र मंडल" की स्थापना की गई, जो कि कांग्रेस कार्यकर्ताओं के प्रभाव के अंतर्गत

था। इससे मध्यप्रांत में युवकों और छात्र–शक्ति का प्रादुभवि हुआ। युवाओं तथा छात्रों ने आन्दोलन में सकिय भाग लिया। 1926 में प्रांतीय हिन्दू महासभा की स्थाना की गई। पूर्ण स्वराज्य प्राप्ति के लक्ष्य की घोषणा के बाद की घटनाएँ तेजी से घटी। 26 जनवरी 1930 को सम्पूर्ण प्रांत में स्वतंत्र दिवस बड़ी धूमधाम से मनाया गया। जबलपुर के कारवास में पं. सत्येन्द्र प्रसाद मिश्रा द्वारा अपनी कलाई चीर कर अपने खून से तिरंगा झंडा फहराने के लिये लाल रंग की व्यवस्था की गई। 6 अप्रैल 1930 को गांधी जी ने दांडी यात्रा कर समुद्र तट पर नमक बनाकर सविनय अवज्ञा आन्दोलन का सूत्रपात किया। यह आन्दोलन के दो चरण थे। नमक तथा जंगल सत्याग्रह के रूप में। जबलपुर के निकट रानी दुर्गावती की समाधि तक जुलूस निकालकर सेठ गोविन्ददास तथा पं. द्वारका प्रसाद मिश्रा तथा अन्य प्रांत के सत्याग्रहियों ने निष्ठापूर्वक स्वतंत्रता प्राप्ति तक संघर्षरत रहने की शपथ ग्रहण की। सिवनी में डिप्टी कमिश्नर सीमन के आदेश पर आदिवासियों पर गोली चलाई गई। इस गोली काण्ड में तीन महिलाए तथा पुरूष शहीद हो गये। इतना ही नहीं इन शहीदों के शव भी इनके परिवार वालों को अंतिम संस्कार करने के लिये नहीं दिए गए। उल्टे अन्य ग्रामवासियों को भी पुलिस की बर्बरता का शिकार होना पड़ा। इसी आन्दोलन में सिवनी जिले के उगली नामक ग्राम में जंगल सत्याग्रहियों को पुलिस ने पेड़ों से बांध दिया और प्रत्येक को चालीस चालीस कोड़े मारकर लहुलुहान कर दिया था। कुछ सत्याग्रहियों को कांजी हाउस में बन्द कर उन्हें भी निर्दयतापूर्वक कोड़े मारे गये। बड़ी संख्या में आदिवासी गिरतार कर लिये गये।38

5 मार्च 1931 को गांधी इरविन समझोते के साथ प्रांत में यह आन्दोलन समाप्त हुआ। भगत सिंह और उनके साथियों को फांसी की सजा दिये जाने के कारण 8 अप्रैल को ''शहीद दिवस'' मनाया गया और पं. द्वारकाप्रसाद मिश्रा की अध्यक्षता में एक आम सभी आयोजित की गई जिसमें मुख्य वक्ता लक्ष्मनसिंह चौहान थें। इसी प्रकार मध्यप्रांत के बैतूल, सागर, दमोह, सिवनी तथा अन्य जिलों में भी अन्य आमसभा का आयोजन किया गया। मध्यप्रांत और वरार में शान्ति एक वार उस समय फिर भंग हो गयी जव इग्लेंड से गोलमेज सम्मेलन में भाग लेकर वापिस लौटने पर महात्मा गांधी को 4 जनवरी 1932 को फिर से गिरतार किये जाने के शीघ्रवाद दूसरा सविनय अवज्ञा आन्दोलन शुरू हो गया। 1933 तक यह आन्दोलन चला कारावास से मुक्त होने पर गांधी जी रचनात्मक कार्यो में जुट गये इसके साथ–साथ गांधी जी ने हरिजनों के उत्थान हेतु कार्यक्रम प्रारंभ कर दिया था। नवम्बर 1933 में उन्हेंने दस माह की अवधि में सम्पूर्ण देश का भ्रमण किया इस दौरान उन्होने बैतूल का भी दौरा किया। कठोर संघर्ष से थक चुके बैतूल को उनके दौरे ने एक नया जीवन दिया। इसी समय महात्मा गांधी ने देवरी, अन्तपुरा, गढाकोटा तथा सागर का भी दौरा किया। यह दौरा अपने नये निवास स्थान सेवाग्राम से प्रारंभ किया गया था। अगले वर्ष नवनिर्मित कांग्रेस समाजवादी दल ने सागर जिले में अपनी एक शाखा स्थापित की तथा जिले के राजनैतिक जीवन को एक नई दिशा प्रदान की हरिजन कोश के संग्रहण के लिये दौरा करते हुये गांधी जी नरसिंहपुर जिले पहुंचे तथा जिले में उनका भव्य स्वागत किया गया। जिला कांग्रेस समिति के मुख्यालय करेली में एक सभा आयोजित की गयी। गांधी जी के आगमन के वाद से कांग्रेस की गतिविधियों को अत्यधिक प्रोत्साहन मिला और उनमें अधिक तीव्रता आ गई। इस प्रकार गांधी जी ने मध्यप्रांत के सभी जिलों का दौरा किया था।40

अखिल भारतीय कांग्रेस का मार्च 1939 में 52 वां अधिवेशन जबलपुर के त्रिपुरी में हुआ। 52 वां अधिवेशन जबलपुर जिले के इतिहास में एक स्मरणीय घटना थी। सेठ गोविन्ददास स्वागत समिति के अध्यक्ष थे। इस अधिवेशन में सुभाषचन्द्र वोस, पटटामी संतारमैया, को पराजित कर कांग्रेस अध्यक्ष निर्वाचित हुये। 1940 में कांग्रेस से व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ किया गया जो 1941 तक चलता रहा जबलपुर जिले में व्यक्तिगत सत्याग्रह 21 नवम्बर को पं. द्वारका प्रसाद मिश्रा ने जबलपुर से लगभग 4 मील दूर महाराजपुर में व्यक्तिगत सत्याग्रह का श्री गणेश किया उनके द्वारा शुरू किया गया व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रांत में तेजी से फेलने लगा इसमें प्रमुख नेता सेठ गोविन्ददास, काशीप्रसाद पाण्डे, हनुमन्तराव मडुआ, चेतु मेहरा, व्यौहार राजेन्द्रसिंह, सवाईमल जैन तथा एन.पी. मिश्रा सम्मिलित हुये। सत्याग्रह का प्रथम चरण 15 दिसम्बर 1940 को समाप्त हो गया। इसके वाद द्वितीय चरण 6 जुलाई 1941 को आरंभ हुआ तथा 4 दिसम्बर तक चलता रहा। अंत में वापिस ले लिया गया इसमें कुंजीलाल दुवे, पूरनचन्द शर्मा, भवानीप्रसाद तिवारी और गोविन्दप्रसाद खम्पारिया ने सत्याग्रह किया और गिरतार किये गये।41 नरसिंहपुर जिले में भी व्यक्तिगत सत्याग्रह भी प्रारम्भ किया गया इसमें ठाकुर निरंजन सिंह, श्याम सुन्दर, नारायण मुस्रान, कुन्दनलाल तिवारी, शंकरदत्त तिवारी, रामसिंह चौहान, ठाकुर रूद्धप्रतापसिंह आदि ने सत्याग्रह की ओर गिरतार हुये। महाकौशल क्षेत्र में सत्याग्रह में भाग लेने के लिये महात्मा गांधी द्वारा अनुमत 2800 स्वतंत्रता सेनानियों में से 311 सत्याग्रही नरसिंहपुर जिले के थे।42

बैतूल जिले में भी व्यक्तिगत सत्याग्रह तीव्र गति से फैलने लगा था। 28 अप्रैल 1940 को बाबूराव घाटे ने ''इंकलाव जिन्दावाद ''लिखे पर्चे बांटने प्रारंभ किये यह पर्चे उन्होंने बैतूल में मोटर स्टेण्ड के समीप वांटे थे, इन पर्चो ने जन मानुष को ब्रिटिश सरकार के विरूद्ध उठने को प्रोत्साहित किया। भैंसदेही व मुल्ताई तहसील में भी पर्चे वांटे गये। उन्हें 27 मई 1940 को तेंदूखेड़ा में गिरतार कर लिया गया। फारवर्ड ब्लाक के कार्यकर्ताओं द्वारा भी पर्चे बांटे गये थे। उन्हें भी सजा सुनाई गयी। इस प्रकार मई 1941 तक जिले में सत्याग्रहियों की संख्या 229 तक पहुंच गयी। मध्यप्रांत के सागर जिले में आचार विनोवा भावे के द्वारा व्यक्तिगत सत्याग्रह प्रारंभ किया गया था। इसी प्रकार मध्यप्रांत के दमोह, नागपुर, सिवनी, मण्डला तथा अन्य जिलों में भी व्यक्तिगत सत्याग्रह सफलतापूर्वक किया गया।43 अप्रैल 1942 में क्रिप्स मिशन के असफल होने के पश्चात कांग्रेस कार्यकारिणी समिति ने 14 जुलाई को वरधा में एक प्रस्ताव पारित किया इस प्रस्ताव में अंग्रेज शासकों को एक निश्चित अवधि के भीतर ''भारत छोड़ने'' को कहा गया था। अतः अखिल भारतीय कांग्रेस समिति ने 8 अगस्त 1942 को कांग्रेस के बम्बई अधिवेशन में गांधी जी ने अंग्रेजों के विरूद्ध ''भारत छोड़ो'' का नारा तथा ''करो या मरो'' का मूल मंत्र दिया गया। 7 दिसम्बर को दो रेलवे बुकिंगघर लूटे गये। सितम्बर और अक्टूबर 1942 के दौरान गढा, बरेला तथा पनागर में रेलवे, टेलीफोन तथा तार संचार साधनो की तोड़फोड़ की गयी।44

बैतूल जिले में व्यापक रूप से आंदोलन 9 अगस्त को सभाओं व भाषणों से आरंभ हुआ शीघ्र ही आंदोलन में गति पकड़ली सरकारी रिकार्ड व सम्पत्ति को आग लगा दी गयी। तथा स्थान–स्थान पर जूलूस निकाले गये। 19 अगस्त 1942 में घौराडोंगरी में एक अनोपचारिक बैठक आयोजित की गयी। 18 अगस्त को तेंदूखेड़ा ग्राम में आंदोलन ने एक गंभीर मोड़ ले लिया। जव एक स्थानीय नेता बाबूलाल जैन को गिरतार किया गया जिसके परिणाम स्वरूप 300 व्यक्तियों की एक भीड़ ने पुलिस दल को घेर लिया और हिंसा पर उतारू हो गयी। तथा पुलिस ने भीड़ पर लाठी वरसाई। नरसिंहपुर जिलें में भी रेलवे लाईन व टेलीफोन तारों को क्षति पहुंचाई गयी थी। अनेक

गिरतारियों और धमकियों के वाद भी जिले की जनता ने स्वतंत्रता संघर्ष को जारी रखा। कुछ व्यक्तियों द्वारा वन सत्याग्रह भी किया गया उन्हें भी गिरतार कर लिया गया। जिले के सात प्रमुख नेताओं को 9 अगस्त 1943 को फिर से गिरतार कर लिया जिससे कांग्रेस की गतिविधिया पुनः न भड़क उठें।45

1942 का "भारत छोडो आंदोलन" मध्यप्रांत के दमोह, सागर, सिवनी, नागपुर, रायपुर, तथा अन्य जिलों में भी व्यापक रूप से प्रारंभ हुआ था। तथा इन जिलों में भी सभायें तथा भाषणों का आयोजन किया गया था। जगह–जगह जुलूस निकाले गये थे। जिसके परिणामस्वरूप अनेक स्थानीय नेताओं को गिरतार किया गया। तथा पुलिस द्वारा लाठी चार्ज किया गया।

इस प्रकार मध्यप्रांत और वरार में आंदोलन ने हिंसकरूप ध ारण कर लिया आंदोलन के दमन के लिये पुंलिस द्वारा प्रांत में गोली चलाई गयी, जिसमें अनेक व्यक्ति घायल हुये तथा अनेक व्यक्ति मारे गये। बड़ी संख्या में सत्याग्रही गिरतार कर लिये गये। परन्तु फिर भी आंदोलन स्थगित नहीं किया गया।

1945 में महात्मा गांधी के स्वस्थ्य ने होने के कारण उन्हें रिहा कर दिया गया। इसके कुछ समय वाद ब्रिटेन में मजदूर दल सतारूढ हुआ। नइं सरकार ने चुनाव करने का निर्णय लिया। जिसे 1946 के प्रारंभ में आयोजित किया गया। परिणामस्वरूप जबलपुर मंडला ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र को छोड़कर सभी विधान सभा सीटों पर कांग्रेस की विजय हुई। इसी समय आजाद हिन्द फौज के सैनिकों पर मुकदमा चलाया गया, उससे जन प्रदर्शनों की एक और लहर उठी। सन् 1945 में रॉयल इंडियन नेवी में हुआ विद्रोह बहुत खतरनाक सिद्ध हुआ और ब्रिटिश साम्राज्यवाद मुर्दावाद के नारे लगाये जाने लगे तथा बिहार में पुलिस ने हड़ताल कर दी। इसके पश्चात ब्रिटिश सरकार के साथ सवैधानिक वार्ताएँ प्रारंभ हुई। 15 अगस्त 1947 को भारतीय स्वाधीनता के साथ देश लम्बी दासता से मुक्ति मिल गई। इस प्रकार दो सौ वर्षो की गुलामी के बाद हमारा देश आजाद हो गया और हमारी स्वतंत्रता का दूसरा संग्राम समाप्त हो गया।46

lUnHk lwph %

1. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क.130
2. कर्मवीर/प्रवेशांक/1 अगस्त 1997 – पृ.क. 60
3. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 131
4. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर नरसिंहपुर – पृ.क. 61
5. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर नरसिंहपुर – पृ.क. 61
6. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर नरसिंहपुर – पृ.क. 61
7. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 131
8. कर्मवीर/प्रवेशांक/1 अगस्त 1997 – 61
9. कर्मवीर/प्रवेशांक/1 अगस्त 1997 – 61
10. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 131
11. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर सागर – पृ.क. 75
12. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर सागर – पृ.क. 59
13. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 132
14. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर दमोह – पृ.क. 46
15. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 94
16. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क.
17. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ इतिहास खंड – पृ.क. 132
18. मध्यप्रदेश जिला गटेटियर जबलपुर – पृ.क. 98
19. कर्मवीर/प्रवेशांक/1 अगस्त 1997 – पृ.क. 70
20. कर्मवीर/प्रवेशांक/1 अगस्त 1997 – पृ.क. 71
21. डी.पी.मिश्रा : हिस्ट्री ऑफ द फ्रीडम मूव्हमेर इन म.प्र. – प्र.क. 80–81
22. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 133
23. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बैतूल – पृ.क. 134
24. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 134
25. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 135
26. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहास खंड – पृ.क. 135
27. शुक्ल अभिनन्दन ग्रंथ : इतिहासा खंड – पृ.क. 136
28. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 100
29. प्रयाग दिग्दर्शन तिवारी : भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन – पृक. 150
30. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 100
31. डॉ. श्रीमती एग्नेस ठाकुर : मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन – पृ.क.
32. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर नरसिंहपुर – पृ.क. 65
33. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 102
34. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 103
35. डॉ. श्रीमती एग्नेस ठाकुर : मध्यप्रदेश में स्वाधीनता आन्दोलन – पृ.क.
36. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 104
37. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बैतूल – पृ.क. 64–65
38. कर्मवीर/प्रवेशांक/1 अगस्त 1997 – पृ.क. 88–89
39. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बैतूल – पृ.क. 68
40. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर सागर – पृ.क. 77
41. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 111
42. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर नरसिंहपुर – पृ.क. 67
43. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर बैतूल – पृ.क. 69
44. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 112
45. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर नरसिंहपुर – पृ.क. 69
46. मध्यप्रदेश जिला गजेटियर जबलपुर – पृ.क. 113